ISSN : 2229-5550

नाट्यम्

85-88 (संयुक्तांक), अप्रैल 2018-मार्च 2019

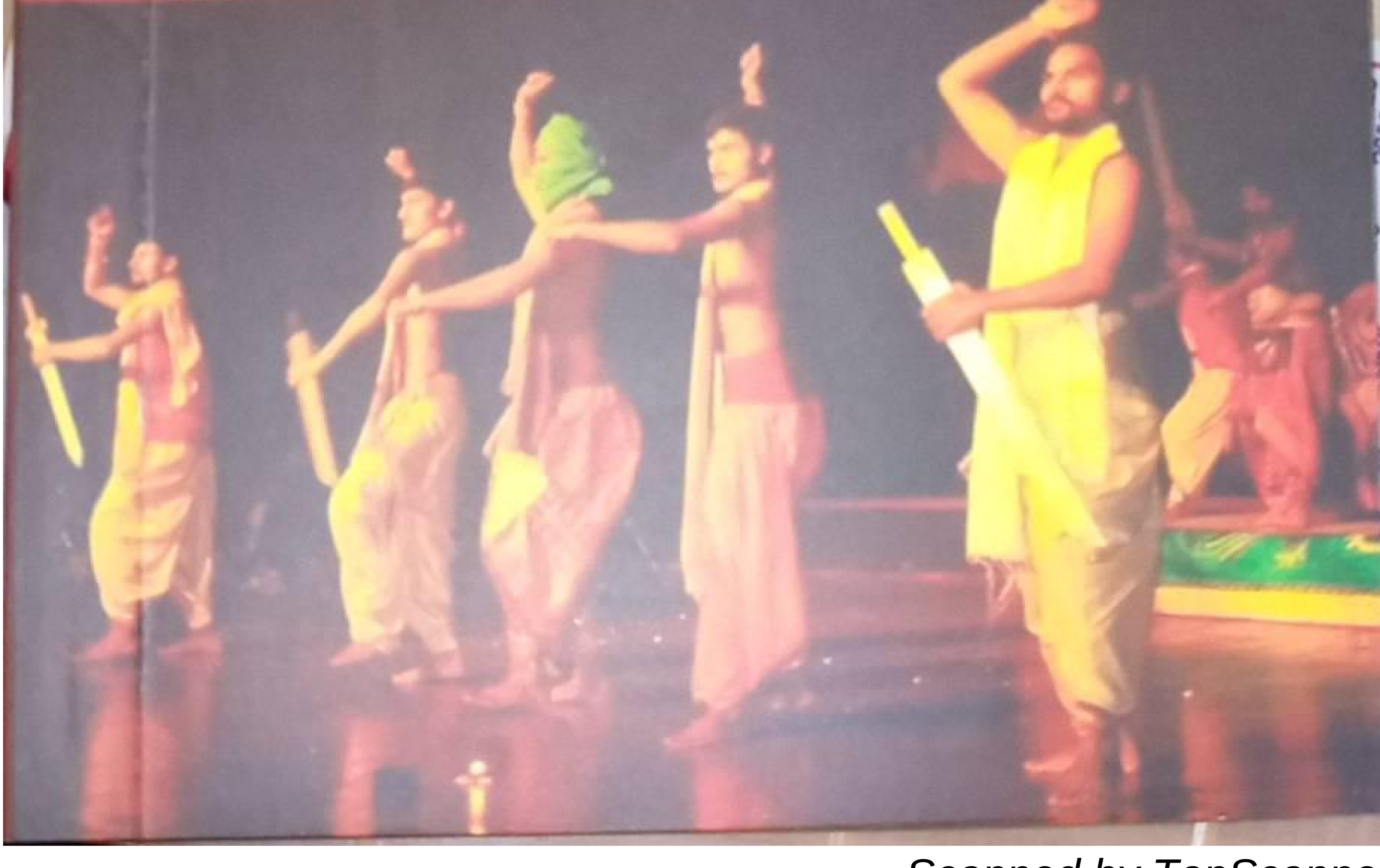

Scanned by TapScanner

नाट्यम्

85-88 (संयुक्तांक), अप्रैल 2018-मार्च 2019

Scanned by TapScanner

ISSN : 2229-5550

नाट्यम्

85-88 (संयुक्तांक), अप्रैल 2018-मार्च 2019

रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका

प्रधान संपादक

राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रवन्ध संपादक

सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल

नौनिहाल गौतम

रामहेत गौतम

शशिकुमार सिंह

किरण आर्या

प्रकाशक

नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग

डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Scanned by TapScanner

नाट्यम्
85-88 (संयुक्तांक), अप्रैल 2018-मार्च 2019
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका
ISSN : 2229-5550
UGC Approved Journal Sr. No. 41002
नाट्य परिषद् (पंजीकरण क्र. 100066)
संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit, Doctor Harisingh Gour University, Sagar, Madhya Pradesh-Pin-470 003. India. Phone-Fax (off.) : 07582-264366

सदस्यता शुल्क :
प्रत्येक अंक - 25/- रु., वार्षिक - 100/- रु.
आजीवन (प्रति व्यक्ति) - 1000/- रु.
आजीवन (प्रति संस्था) - 5000/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है जो नाट्य परिषद्, सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com
© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, **अमन प्रकाशन** नमक मंडी, कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति के लिए *नाट्य परिषद्* से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से *नाट्य परिषद्*, संपादक या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सूचना - आजीवन ग्राहकों को डाक व्यय 250 रु. (दो सौ पचास रूपये मात्र) पर नाट्यम् के उपलब्ध पुराने अंक भी निःशुल्क देय हैं।

Scanned by TapScanner

अनुक्रम

1. संस्कृत नाटकों में मुख्यधारा से इतर पात्रों का चारित्रिक विश्लेषण 11
सरोज कौशल

2. शकुन्तला का सामाजिक सामर्थ्य 21
सुमन कुमार झा

3. महाकवि कालिदास की नाट्यकला (अभिज्ञानशाकुन्तलम् के परिप्रेक्ष्य में) 30
सरस्वती सिंह

4. प्रतिमानाटकम् में सीता 37
शशिकुमार सिंह

5. राजशेखर कृत बालरामायणम् में अद्भुत रस 43
बाबूलाल मीना

6. बीसवीं शताब्दी की संस्कृत नाट्यकर्त्रियाँ 51
वत्सला

7. आम्रपाली के नाट्यधर्मी तत्त्व 60
अजय कुमार मिश्र

8. महाभारत आधारित रूपकों में सामाजिक समस्याएँ 67
जहाँआरा

Scanned by TapScanner

9. नाट्यशास्त्रीय परम्परा में रस तत्त्व 74
पूनम यादव

10. नाटक में नायक की अवधारणा : स्वरुप एवं अनुप्रयोग 89
नन्दिता आर्या

11. कविराज राजशेखर द्वारा प्रतिपादित 'कविसमयः' 101
सिद्धात एवं अनुप्रयोग
('विद्धशालभंजिका' नाटिका के विशेष सन्दर्भ में)
विनीता यादव

12. विक्रमोर्वशीयम् में प्रकृति-चित्रण 113
सूर्यनारायण गौतम 'वेदाचार्य'

13. वेणीसंहार की नाट्यशास्त्रीय समीक्षा 124
सञ्जय कुमार

14. महाकवि भवभूति की प्रेम-दृष्टि 133
सन्दीप कुमार यादव

15. बालरामायण में सामाजिक सद्भाव 140
रामहेत गौतम

16. नफ़रत 142
कन्हैया त्रिपाठी

17. पुस्तक समीक्षा 157
गोपाल लाल मीणा

- लेखक परिचय 159

Scanned by TapScanner